ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)

बुलेटिन संख्या-१
दिनांक- मंगलवार,१ जनवरी,२०१६

टेलीफोन -०६२७४-२४०२६६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः २१.२ एवं ४.६ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ८५ सुबह में एवं दोपहर में ४४ प्रतिशत, हवा की औसत गति २.५ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.८ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ५.० घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में ८.७ एवं दोपहर में १६.५ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा, रात्री एवं सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(०२ से ०६ जनवरी, २०१६)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २ से ६ जनवरी, २०१६ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान २० से २२ डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान ५ से ७ डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। सुबह में कुहासा रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन ८ से १० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से २ एवं ३ जनवरी को पछिया हवा तथा उसके बाद पूरवा हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में करीब ७५ से ८० प्रतिशत तथा दोपहर में ५० से ५५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो २१ से २५ दिनों की हों गयी हो उसमें सिंचाई कर ३० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- कम तापमान के कुप्रभाव से बचने के लिए किसान भाई खड़ी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। आलू, गाजर, मटर, टमाटर, धनियाँ, लहसून में झुलसा रोग की निगरानी करें। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व शिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पुरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर २.५ ग्राम डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर छिड़काव करें।
- बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ इ०सी०@ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव करे।
- अगात मक्का की फसल जो ५० से ५५ दिनों की हो गयी हो, उसमें सिचाई कर ५० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ा दे।
- सब्जियों वाली फसल में निकाई-गुड़ाई एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। अगात बोयी गयी मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का १.० मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का ३ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
- पिछात बोयी गई आलू की फसल से खरपतवार निकालें एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। आलू में झूलसा रोग की निगरानी नियमित रुप से करें। प्याज की रोपाई पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर करे।
- तापमान में लगातार गिरावट के कारण दुधारु पशुओं के दुध उत्पादन में आयी कमी को दूर करनें के लिए हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से ५० ग्राम नमक, ५० से १०० ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः २२.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.३ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः ५.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ३.२ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी